॥श्री॥

चिडिया और चुरुगन -

हरिवंशराय बच्चन

१ छोड़ घोसला बाहर आया,
देखी डालें देखे पात।
और सुनी जो पत्ते हिलमिल
करते हैं आपस में बात ॥
माँ, क्या मुझको उड़ना आया?
नहीं चुरुगन तू भरमाया।

२. डाली से डालीपर पहुँचा
देखी कलियाँ देखे फूल।
ऊपर उठकर फुनगी जानी
नीचे झुककर जाना मूल ॥ माँ.....

३ कच्चे पक्के फल पहचाने
खाए और गिराए काट।
खाने गाने के सब साथी
देख रहे हैं मेरी बाट ॥ माँ......

४. उस तरुसे इस तरुपर आता
जाता हूँ धरती की ओर।
दाना कोई कहीं पडा हो
चुन लाता हूँ ठोक-ठोर ॥ माँ.....

५. मैं नीले अज्ञात गगनकी
सुनता हूँ अनिवार पुकार।
कोई अंदरसे कहता है
उड़ जा, उड़ता जा पर मार।
माँ क्या मुझको उड़ना आया?
आज सफल हैं तेरे डैने
आज सफल है तेरी काया ॥

© www.madhaveeraghuveer.com